Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

अनुसंधान का अर्थ और महत्व ललित कला संगीत के सन्दर्भ में

डॉ० जया शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन विभाग आर्य कन्या पी० जी० कॉलेज, हापुड़ (पंचशील नगर), उत्तर प्रदेश।

सारांश– संगीत शिक्षण पक्ष में सुधार तथा शोध हो सकता है। अतः ऐतिहासिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक वैज्ञानिक प्रायोगिक विषय व शिक्षण पक्ष में सभी पहलू संगीत में अधिकधिक शोध की सम्भावनाओं को जागृत करते हैं।

मुख्य शब्द– अनुसंधान, अर्थ, महत्व,ललित, कला, संगीत, सामाजिक, अनुसंधान।

खोज, अनुसंधान, अन्वेषण गवेषणा आदि सभी शब्द हिन्दी में शोध शब्द के पर्यायवाची हैं। इसको मराठी भाषा में संशोधन और अंग्रेजी में रिसर्च (त्मेमंतबी) कहते हैं।

जैम ।कअंदबमक स्मंतदमतश्े क्पबजपवदंतल व िब्नततमदज म्दहसपेी ;वगवितकद्ध के अनुसार, त्मेमंतबी पे। बंतमनिस पदअमेजपहंजपवद वत पदुनपतल मेचमबपंससल जीतवनही मंतबी वित दमू बिजे पद।दल इतंदबी व िादवूसमकहम.

जैम छमू ब्मदजनतल क्पबजपवदंतल के अनुसार,

तथ्यों या सिद्धान्तों की खोज के लिए किसी वस्तु या किसी के लिए सावधानीपूर्वक किया गया जांच या अन्वेषण, अनुसंधान कहलाता है।

लुण्डवर्ग (ळमवतहम स्नदकपतमतह) के शब्दों में–

'अनुसंधान वह है जो अवलोकित तथ्यों के सम्भावित वर्गीकरण सामान्यीकरण और सत्यापन करते हुए पर्याप्त रूप में वस्तु –विषयक और व्यवस्थित हों '

त्मकउंद – उवदल के शब्दों में–

'नवीन ज्ञान प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम अनुसंधान कहते हैं।' 'रिसर्च' शब्द का सामान्य अर्थ है– अवधानपूर्वक अथवा श्रमपूर्वक की गयी सूक्ष्म खोज।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि अनुसंधान नवीन तथ्यों या सिद्धान्त की खोज के लिए संचालित किया जाता है। हमारा मानव मन स्वभावतः नई–नई जिज्ञासाओं के साथ–साथ नए–नए प्रयोगों द्वारा नवीन अन्वेषणों में प्रवृन्त रहता है। ऐसे नवीन अन्वेषणों की प्रवृत्ति के पीछे मनुष्य का मूल उद्देश्य जीवन को अधिक सुखमय, सुंदर, उदात्त, विराट और सांस्कृतिक बनाना होता है। साहित्य संगीत और कला तीन ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं जो मानव के व्यक्तित्व को महानता प्रदान करते हैं, लेकिन जब हम संगीत के क्षेत्र को लेते हैं तो इसके अंतर्गत न केवल शास्त्रीय अपितु व्यवहारिक पक्ष को भी गहराई से देखते हैं। यह तो सर्वमान्य है कि प्रत्येक

विषय की अपने मौलिक स्वरूप के अनुसार शोध प्रविधि अलग अलग होती है। जैसे विषय निर्वाचन रूपरेखा, भूमिका, प्राक्कथन, सामग्री संकलन वर्गीकरण, विश्लेषण, उपसंहार, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची आदि।

संगीत विषय में शास्त्र पक्ष के साथ–साथ क्रियात्मक पक्ष पर नए–नए रागो का निर्माण, विभिन्न कलाकारों के प्रस्तुतीकरण के ढंग पर शोध कार्य है। इसी तरह वाद्यों की क्षमता पढ़ाना, नए–नए वाद्यों का निर्माण, आदि भी शोध कार्य हैं। और इस प्रकार के शोध कार्य में शोध प्रविधि की अपेक्षा सांगीतिक प्रयोगशाला का महत्व अधिकार है। हमारे भारतीय संगीत के कलात्मक एवं शास्त्रीय पक्ष पर हर समय नई–नई रचनाएं होती रही है और होती रहेगी। क्योंकि किसी भी साहित्य या कला को शास्त्रीय आधार तब मिलता है। जब उसके पीछे एक परम्परा और शास्त्रीय नियम विद्यमान हो और हमारा संगीत परम्परागत होने के साथ–साथ पूरी तौर शास्त्रीय नियमों के आवद्ध है। प्राइमरी स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक संगीत शिक्षा की प्रयोजनीयता के मर्म को समझते हुए संगीत को एक महत्वपूर्ण विषय स्वीकार किया गया है। संगीत शिक्षा का अभिप्राय भी समाज कल्याण ही है। संगीत–शिक्षण का प्रारम्भ गुरु शिष्य परम्परा के द्वारा हुआ। जितने उच्च कोटि के कलाकार हुए हैं या हैं उनका सम्बंध किसी न किसी परम्परा से अवश्य रहा है। वही घरानेदार शिक्षण–पद्धति जो कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की अपनी विशेषता है। उस पद्धति पर भी आज की शिक्षा के शिक्षण में तकनीकी प्रगति के साथ कुछ प्रभाव पड़ा। इस सब को देखते हुए हम यह भी कह सकते हैं कि एक तरह से घरानेदार पद्धति का ह्रास हुआ है।

उदाहरणार्थ जैसे यदि रिकार्ड अथवा टेप को लें तो जहां इसके अविष्कार को संगीत जगत को बहुत लाभ प्राप्त हुआ है तो दूसरी ओर एक शोधार्थी भी इन कलाकारों को सुनकर उनकी शैली अथवा आज के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यह ज्ञान तभी सम्भवन हो सकता है जब विद्यार्थी ने गुरु के समक्ष बैठकर गायकी का अन्दाज स्वर लगाने का ढंग, आलापचारी की शिक्षा ली है। अतः इन सब कारणों पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है जिससे हम अपने प्राचीन तथा परम्परागत संगीत पद्धति को सुरक्षित रख सकें।

फिल्म संगीत की बढ़ती लोकप्रियता के कारण भी शास्त्रीय संगीत का समाज से अलगांव दृष्टिगत हो रहा है। आज जनसाधरण जितना फिल्म संगीत की ओर आकृष्ट हुआ है, उसका जुड़ाव जितना चित्रपट संगीत की ओर बढ़ा है, शास्त्रीय संगीत से उसकी दूरी बढ़ी है। किन्तु समाज का एक विशेष वर्ग ऐसा भी है जो शास्त्रीय संगीत में रुचि रखता है और आनन्दित होता है। अतः ऐसे कारण मन में निःसन्देह जिज्ञासा की अनुभूति कराते हैं कि शास्त्रीय संगीत जो कि पूत व पवित्र है हमारी प्राचीन धरोहर है विरासत है संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। उसकी भी लोकप्रियता चित्रपट संगीत से अधिक हो। अतः संगीत का उद्देश्य आनंद प्राप्ति और सौन्दर्य बोध आज के परिवेश में संगीत क्रियापक्ष एवं शास्त्रपक्ष में भिन्नताओं के कारण फैली हुई भ्रान्तियाँ, आदि कुछ ऐसे विषय है जिनके समाधान के लिए शोध कार्य होना चाहिए, तब ही इस विषय की आगे प्रगति हो सकती है, उनमें नवीन मार्ग प्राप्त हो सकते हैं तथा इसका प्रचार–प्रसार सुचारु रूप से संभव हो सकेगा।

वर्तमान युग क्रांति का युग है। आत का समाज प्रगतिशील है। आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि उपकरणों के आगमन ने संगीत को घराना परम्परा के बाहर भी स्थान दिलाया है। स्पर्धा के इस युग में अपना स्थान बनाने की चाह, कुछ नवीन करने की चाह, अधिक से अधिक श्रोताओं को आकर्षित करन की इच्छा आज के विद्यार्थियों में तीव्रता हो रही है। परम्परा निरन्तर प्रगतिशील बदलावों के साथ चलती है। अतः समाज की

बदलती रुचियों और परिस्थितियों के साथ कलाकार को अपनी कला में भी परिवर्तन करना चाहिए तभी कलायें संकुचित दायरे से ऊपर उठ सकेगी।

आवश्यकता इस बात की है कि अपनी परम्परा को बरकरार रखते हुए अपने सोच को लगातार नई दिशा देते चले। संगीत के दोनों पक्षों सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक में शोध कार्य की प्रबल सम्भावनाएं हैं। शोधकर्ता को संगीत के दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष में शोधकार्य करने के लिए चयन करना पड़ता है अर्थात् यदि शोधकर्ता की रुचि संगीत के क्रियात्मक पक्ष में है तो उसे क्रियात्मक पक्ष से सम्बन्धित विषय को लेना होगा और यदि शास्त्रीय पक्ष में रुचि हो तो शास्त्रीय पक्ष का विषय लेना होगा। इसके अतिरिक्त संगीत का शिक्षण पक्ष भी महत्वपूर्ण है। अतः इसके क्षेत्र में शोध कार्य स्वतंत्र रूप से करने की प्रबल सम्भावनायें हैं। इस संदर्भ में डॉ. प्रेमलता शर्मा के विचार दृष्टव्य है– संगीत में अनुसंधान की आवश्यकता पर कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। सांगीतिक शोध को मुख्यतः तीन भागों में देखा जा सकता है। (1) सैद्धान्तिक विषय (शास्त्रीय पक्ष) (2) प्रायोगिक पक्ष (3) सामाजिक पक्ष (4) शिक्षण पक्ष विगत तीन शताब्दियों से संगीत शास्त्र प्रायः उपेक्षित रहा है। तत्कालीन मुसलमान शासकों ने केवल संगीत पक्ष को प्रोत्साहित किया। उस समय के बाद उस्ताद लोग रियाज पर ही बल देते थे परन्तु संगीत शास्त्र को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। प्रायः सभी पुराने संगीत ग्रन्थ संस्कृत में थे जिन्हें न तो मुसलमान कलाकार जानते थे और न ही उन्होंनें उनका अनुशीलन– परिशीलन करने का प्रयास किया। अतः इन ग्रन्थों के अध्ययन से उन पर शोध करके हम अपने प्राचीन संगीत को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

संगीत के सामाजिक पक्ष पर शोध कार्य जोड़ते हुए करने के लिए संगीत का समाज के साथ सम्बंध भी शोध विषय का चयन किया जा सकता है। जैसे समाज में संगीत की स्थिति एवं उसका महत्व।

इसके साथ–साथ संगीत क दार्शनिक स्वरुप का भी अध्ययन किया जा सकता है अर्थात् संगीत का दर्शन क्या है? संगीत का दर्शन के साथ क्या सम्बंध है आदि विषयों पर भी शोध कार्य की सम्भावनाएं हैं। जिस प्रकार समाज देश का दर्पण होता है उसी प्रकार संगीत समाज का दर्पण है।

संगीत के माध्यम से हमें समाज की झलक प्राप्त हो जाती है। अर्थात् लोकसंगीत लोकनृत्य के माध्यम से देश में रहने वाले विभिन्न प्रांतों के लोगों की जीवन शैली की झलक उस प्रान्त के लोक संगीत द्वारा प्राप्त हो जाती है। संगीत मनुष्य के सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के साथ जुड़ा है।

मनोवैज्ञानिक पक्ष पर भी शोध की संगीत के क्षेत्र में प्रबल सम्भावनाएं हैं। प्राचीनकाल से आज तक की मानसिक प्रक्रिया को हम समझने का प्रयत्न करते आ रहे हैं। किन्तु इसके प्रायोगिक मनोवैज्ञानिक स्तर से संगीत के संदर्भ में जान सकते हैं। नाटकों का मंचन फिल्मों एवं नृत्य के संगीत संयोजकों व रागों के माध्यम से मानसिक स्थिति का पता लगा सकते हैं। संगीत में वैज्ञानिक पक्ष को लेकर भी शोध कार्य करने की प्रबल सम्भावनाऐं हैं। इसमें सांगीतिक ध्वनि, भौतिक प्रकृति उसका उद्भव एवं ग्रहण कंठ के गुण दोष गायकों की ध्वनि उत्पादन श्रवण क्षमता एवं गुण दोष आदि।

अतः अन्त में कह सकते हैं कि संगीत एक प्रायोगिक कला है। इसका क्रियात्मक पक्ष पर शोध की अनेक सम्भावनाएँ सकती हैं।

विभिन्न कलाकारों की प्रत्येक राग में अलग–अलग मान्यताएं है तथा रागों के स्वरुपों में भी मिलता है। अतः रागों की स्वाभाविक इस उत्पत्ति के अनुकूल बंदिशों की रचना पर शोध कार्य स्वयं में बहुत प्रभावी सिद्ध रहेगा।

कंठ साधना करने के लिए आवाज को सुन्दर बनाने के लिए नई–नई रीतियों की खोज करना तथा वर्तमान के गायकों वादकों के राग प्रस्तुतीकरण पर भी शोध किया जा सकता है।

महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में जो संगीत विषय की उच्च स्तर में शिक्षा दी जाती है उस शिक्षण के क्या गुण दोष है तथा घरानेदार पद्धति आज के युग में कहां तक

इस विषय पर संगीत शिक्षण पक्ष में सुधार तथा शोध हो सकता है। अतः ऐतिहासिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक वैज्ञानिक प्रायोगिक विषय व शिक्षण पक्ष में सभी पहलू संगीत में अधिकधिक शोध की सम्भावनाओं को जागृत करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय संगीत का इतिहास – राम अवतारवीर

संगीत मणि – सीमा जौहरी

संगीतायन – डॉ0 महारानी शर्मा

भारतीय संगीत में शोध प्राविधि – अलका नागपाल